पाना था जो पा लिया ।

नियतिचक्र की पुनरावृत्ति का आभास लिए एक अद्वितीय महामना की उपस्थिति से सर्वथा अनभिज्ञ, वर्तमान सभ्यता को समय की समीपता का संकेत कदाचित अब अनुभव होने लगा हो, परन्तु लगभग आठ दशक पूर्व अवश्यम्भावी महापरिवर्तन का साक्षात दर्शन करने वाले दादा लेखराज अपने जवाहरात के सफल व्यापार को त्यागने के विचार को गम्भीरता से लेने लगे थे । 15 दिसंबर 1876 में अविभाजित भारत के सिंध प्रान्त के हैदराबाद शहर में एक मध्यम वर्गीय शिक्षक परिवार में जन्मे लेखराज खूबचंद कृपलानी, अपनी अद्वितीय प्रतिभा से अपने समय के सफलतम व्यापारी बने और अपने जवाहरात के व्यापार को भारतवर्ष की व्यावसायिक नगरियां मुंबई और कोल्काता तक पहुंचाया, साथ ही साथ नेपाल सहित समकालीन राजघरानों से व्यक्तिगत एवं व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किए ।

लेकिन नियति को कुछ और ही मंज़ूर था । घटना सन 1936 की है । वैष्णवी, वल्लभाचारी, धर्म-कर्म में अटूट श्रध्दा रखने वाले नियमित गीतापाठी दादा लेखराज एक दिन अपने गुरु की आज्ञानुसार मुंबई में बाबुलनाथ मंदिर में प्रवचन में सम्मिलित हुए । लेकिन कुछ समय उपरांत अचानक ही बीच प्रवचन से उठकर अपने कमरे की तरफ जाने लगे । गुरु के प्रवचन की मर्यादा कभी न तोड़ने वाले दादा को अचानक उठकर जाते देख उनकी पुत्रवधु उनके पीछे-पीछे गयीं, विचार किया शायद उनकी तबियत नासाज़ होगी । लेकिन कमरे में जाकर एक अद्भुत नज़ारा देखा । एक अद्वितीय शक्ति के प्रकम्पन का आभास मिला एवं दादा के ही मुखारविंद से यह बोल उच्चारित हुए, (पर ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके अन्दर जैसे कोई और ही शक्ति विराजमान है), 'निजानंद स्वरूपम शिवोहम शिवोहम .....'।

कुछ समय उपरांत दादा अपनी स्वाभाविक स्थिति में आये तो पुत्रवधु ने प्रश्न किया कि वह कैसी आवाज़ थी । दादा बोले, एक लाइट थी, एक माईट थी जो मेरे अन्दर आई और स्वयं का परिचय दिया, साथ ही एक स्वर्ग जैसी अद्भुत दुनियां का साक्षात्कार कराया और कहा ऐसी दुनिया तुम्ह बनानी है । इस घटना के उपरांत दादा लेखराज स्वचिन्तन में डूबे रहने लगे । इन्ही दिनों उन्ह श्रीविष्णु स्वरूप के साक्षात्कार होने लगे और ये स्वर सुनाई देने लगे, 'अहम् विष्णु तत्त्वम '। इन अनअपेक्षित घटनाओं के कारण दादा ने कुछ समय व्यवसाय से विराम लेकर अपने मित्र के घर बनारस चले जाने का निर्णय लिया । वहां एक दिन प्रातः बगीचे में अचानक उन्ह महाविनाश का साक्षात्कार हुआ जिसे देख वे बहुत ही व्यथित हो गए और काफी मनन चिंतन के उपरांत, अपने जवाहरात के सफल व्यवसाय को त्यागने का निर्णय ले लिया । कोल्काता में अपने व्यावसायिक साझीदार से व्यवसाय का अपना हिस्सा लेकर घर में टेलीग्राम भेजा, 'अलफ को अल्लाह मिला बे को मिली बादशाही '।

तदुपरांत 1937 में अपने लौकिक निवास स्थान हैदराबाद पहुंचकर आपने ओम मण्डली की स्थापना की और अपनी सारी संपत्ति माताओं द्वारा संचालित ट्रस्ट बनाकर दे दी । ओम मंडली में दिव्यता से भरपूर एक कन्यां थी, जिनकी 'ओम' ध्वनि सबका मन मोह लेती थी, उनका दिव्य नाम रखा गया ओम राधे और दादा लेखराज को दिव्य नाम मिला प्रजापिता ब्रह्मा । नियमित सत्संग होने लगे और दादा में श्रीकृष्ण के साक्षात्कार होने लगे । धीरे-धीरे सिंध प्रान्त की माताएं बहन ओम मंडली से जुड़ने लगीं ।

लेकिन संस्था के कड़े ब्रह्माचारी नियमों के कारण उन्ह समाज के असाधारण विरोध का सामना करना पड़ा । जिज्ञासुओं की संख्या बढ़ने के साथ ही साथ विरोध भी बढ़ने लगा । अख़बारों म उन्ह अपमानित करने वाले बयान छपने लगे । लोग जुलूस निकालकर अपना विरोध प्रकट करने लगे । विरोध यहाँ तक बढ़ा कि दादा लेखराज का निवास स्थान अग्नि को समर्पित कर दिया गया । जीवनभर सम्मानित जीवन जीने वाले महामानव को अपमान की ज्वाला का सामना करना पड़ा । तब दादा का विचार मंथन चलने लगा, कदाचित ये महाभारत म वर्णित लाखा भवन तो नहीं ।

विरोध से बचने के लिए, ओम मंडली को हैदराबाद से कराची स्थानांतरित किया गया । ब्रह्मा वत्सों की संख्या 400 तक पहुँच गई थी । ब्रह्मा बाबा के भागीरथ प्रयत्नों से ज्ञान गंगा का जो अवतरण हुआ, उसका अविरल प्रवाह होने लगा । प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद से परमपिता शिव की वाणी नित्य प्रतिदिन श्रवण की जाने लगी । इस प्रकार पतित पावनी ज्ञान गंगा अंतर के मैल मिटाने लगी । लेकिन परीक्षाओं का रुकना थमा नहीं और भारत- पाकिस्तान बंटवारे की ज्वाला दहकने लगी । आख़िरकार सन 1950 म ईश्वरीय प्रेरणानुसार ओम मण्डली को भारत म स्थानांतरित करने का निणय लिया गया । ब्रह्मा बाबा के शुभचिंतकों ने अरावली पवत श्रंखला म स्थित माउंट आबू म संस्था का मुख्यालय स्थापित किया और नाम रखा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय । स्वयं परम शिक्षक की अमृतवाणी ब्रह्ममुख से उच्चारित होने लगी । बाबा की जीवनचया अपने म एक मिसाल थी । महलों म जीवनयापन करने वाले महापुरुष ने स्वयं के लिए झोंपड़ी म रहने का निणय लिया लेकिन साथ रह रहे शिक्षार्थियों के लिए पक्के मकान बनवाए ।

ब्रह्मा बाबा के अनन्य विद्यार्थियों म से, ओम राधे को मातेश्वरी जगदम्बा के नाम से जाना जाने लगा, क्योंकि बाबा ने उन्ह सब माताओं-बहनों की देखरेख की जिम्मेदारी सौंपी थी । बाबा ने कुछ अनन्य बहनों को भारत के विभिन्न शहरों म सेवाथ भेजा जिनम प्रमुख थीं प्रकाशमणि एवं जानकी जी । सन 1960 तक विद्यालय के लगभग 100 सेवाकद्र खुल चुके थे । 18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा ने यज्ञ का कारोबार प्रकाशमणि जी को सौंपकर अपना नश्वर शारीर त्याग अव्यक्त रूप धारण किया ।

विरोधियों के अनुमान के विपरीत प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, ब्रह्माबबा के महाप्रयाण के बाद भी निरंतर प्रगति कर रहा है, जिससे यह संकेत मिलता है कि ब्रह्माबबा के माध्यम से इस धमग्लानि के समय ईश्वरीय काय करने वाली परमशक्ति कोई और है । संस्था की विजय पताका फहराते हुए वसुधैव कुटुम्बकम की भावना साथक करने, विश्व म ईश्वरीय सन्देश पहुँचाने हेतु दादी जानकी जी ने 1974 म विदेश प्रस्थान किया और लन्दन म संस्था का मुख्यालय स्थापित कर दिया ।ब्रह्मा बाबा ने भारत के लुप्त प्रायः ज्ञान को धरा पर अवतारित करने का जो भागीरथ प्रयत्न किया था, उसका अविरल प्रवाह विकारों की अग्नि म भस्म हुए दैवी आत्माओं को चहुँ ओर जीवनदान देने लगा । अनेक देशों म सेवास्थान आरम्भ हुए । संस्था द्वारा संचालित विश्व सेवा से प्रभावित होकर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने ब्रह्माकुमारी संस्था को एन.जी.ओ. का दजा दिया और सन 1986 म विश्व शांति पुरुस्कार से भी सम्मानित किया । ब्रह्मा बाबा के अथक एवं साथक प्रयत्नों के जीवंत प्रमाण स्वरुप

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने आध्यात्म के अनेक जटिल रहस्यों को सुलझाया है । सृष्टि चक्र को पुनरावृति को पहेली सुलझी, आत्मा के अनादि एवं आदि स्वरुप का परिचय मिला और दिव्या गुणों को धारणा से साधारण मनुष्य जीवन दिव्यता से महकने लगा । वतमान समय प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय भारत म 4500 से अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से जन -जन को ईश्वरीय सन्देश देकर मूल्यनिष्ठ जीवन जीने को प्रेरणा देने को सेवा म तत्पर है साथ ही साथ विश्व के पाँचों महाद्वीपों म 110 से भी ज्यादा देशों म ईश्वरीय सेवारत है ।

ब्रहमा बाबा स्वभाव से उदारचित, शुद्द एवं सकारात्मक संकल्पों के धनी, सब के प्रति शुभ भावना एवं शुभ कामना रखने वाले, अति विनम्र स्वभाव वाले, एकांतवास एवं मिलनसारिता का सामंजस्य रखने वाले, असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे ।

संस्था के अंतराष्ट्रीय मुख्यालय, माउन्ट आबू, राजस्थान स्थित पांडव भवन परिसर म, जहाँ बाबा का पार्थिव शरीर पञ्च तत्वों म विलीन हुआ, उसी स्थल पर उनकी स्मृति म निर्मित शांति स्तम्भ उनके दिव्य कर्मों को याद दिला रहा है और उनकी राह पर चलकर, सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत को पुनः स्वणर्भूमि बनाने की प्रेरणा दे रहा है ।

यशवंत मिश्रा